सादर प्रकाशनार्थ

21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस

प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय , विश्व सद्भावना भवन टी.पी. नगर कोरबा द्वारा 21जून अंत र्राष्ट्रीय योग दिवस पर अपने सभागार में शाम 5:00 से रखा गया था। ब्रम्हाकुमारी बहनों के द्वारा योग कराया गया जिसमें नगर के गणमान्य नागरिको ने राजयोग की गहन अनूभिति की एवं राजयोग के बार मे जाना। कार्य क्रम में आये अतिथियों ने अपन-अपने विचार रखें।

भ्राता विश्वेश्वर ठाकुर जी (वरिष्ठ सदस्य पतंजली योग) ने कहा - यम नियम, आसन, राजयोग के द्वारा आत म नियंत्रण एवं शरीर पर भी नियंत्रण रहता है। बहन बी.के. जितेश्वरी ने रातयोग के महत्व केबारे बताया कि रा जयोग के द्वारा स्वस्थ तन और मन का विकास कर सकते है, हमारे हिन्दू धर्म में देवी- देवताआ को भी किसी न किसी योग मुदा में देखन को मिलता है। यह राजयोग हमें अपने देवी - देवताओं के द्वारा विरासत में मिला है। बहन डॉ. रजनी पांडे (गायत्री परिवार) ने कहा - ब्रम्हाण्ड में बनी सब चीजें साइंटिफिक है। व्यवहारिकता से सही सामंजस्य बैठा ले वही सच्चा योगी है। भ्राता डॉ. अविनाश बहल (आर्ट आफ लिविंग) ने कहा कि वृक्ष के बीज को यह नही मालूम होता कि वह कभी विशाल भी बन सकता है। प्रत्येक को महान बनकर संसार को अमृत करना है। योग से ही आत्मिक अनभूति होगी एवं सुख शांति का प्राप्ति होगी। बहन मधु पांडे (अधिवक्ता) ने कहा जैसे श्री रामचन्द्र जी ने अपना कर्तब्य निभाते हुए अपना योग स्थापित किया। विषाद व अवसाद से योग बचाता है। भ्राता संजय अग्रवाल (दंत चिकित्सक) ने कहा मुझ राजयोग से अच्छी अनुभूति हुई। भ्राता विजय शर्मा (अध्यक्ष- कपिलेश्वरनाथ मंदिर समिति रवि शंकर नगर) ने कहा - वर्तमान समय में रहन-सहन को देखते हुए योग हमारे जीवन के लिए अति आवश्यक है। भ्राता डॉ. देवनाथ (एम.डी. हार्ट स्पेशलिस्ट) ने कहा - संपूर्ण स्वास्थ कि परिभाषा देते हुए कहा कि जो शरीरिक रुप से मानसिक रुप से बौद्धिक रुप से सामाजिक रुप से व आध्यात्मिक रुप से जो स्वस्थ है वही संपूर्ण स्वस्थ है। शारीरिक बिमारी का मूल कारण मन है। यदि मन को स्वस्थ रखा जाए तो हम सभी बिमारियों से छुटकारा पा सकते है और मन का स्वस्थ रखने का राजयोग बहुत अच्छा साधन है। मैने इसका जीवन में एक वर्ष से अनुभव किया है। भ्राता डॉ.सतदलनाथ (अस्थि रोग विशेषज्ञ,बालाजी टामा सेंटर कोरबा) ने बहुत सुंदर गीत सुनाकर सबका मन मोह लिया। बी.के.रुकमणी (सेंटर इंचार्ज प्रजापिता ब्रम्हाकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय कोरबा) ने अपने उद्बोधन में कहा- जिसने खुद को जान लिया उसने खुदा को जान लिया और वही योग कर सकता है। जैसे - बच्चे का योग मॉ से फिर टीचर से फिर दोस्त से शादी पश्चात पत्नि से फिर अपने पुत्र-पुत्री से योग हो जाता है इसी तरह आत्मा का भी परमात्मा से योग स्वत: हो जाता है। राजयोग हमें स्वयं का ज्ञान देता है। भ्राता एल.पी.शर्मा (अधीक्षण यंत्री सो.एस.ई.बी.) ने कहा- योग का मतलब अपने आप को किसी चीज से सजगता से जोड़ना और अनुभूति होना ही योग है। बी.के. विद्या (राजयोग शिक्षिका) के द्वारा आभार व्यक्त किया गया। भ्राता शेखर राम ने कार्यक्रम का मंच संचालन किया।

मानव सेवा में

बी.के.रुकमणी